सुभाषित

दूसरोंके दुःखोंमें सहानुभूति रखेंगे तो जब आपको उसकी आवश्यकता होगी तब लोग आपको अपना सहयोग दिलकी गहराइयोंसे देंगे। ❑ अज्ञात

राहत के कदम

कोरोना संकटके दौरान पूरे देशको लाकडाउन करनेसे इसके अच्छे परिणाम आनेकी पूरी सम्भावनाएं हैं और इसका क्रम शुरू भी हो गया है। संक्रमणमें कमी आनेके संकेत मिले हैं। लाकडाउनका अनुपालन जितना सख्तीसे होगा उतने अधिक अच्छे परिणाम भी आयंगे। २१ दिवसीय लाकडाउनके दौरान केन्द्र और राज्य सरकारोंने अनेक राहतकारी कदम उठाये हैं, जिससे कि जनताकी परेशानी कम हो सके। सबसे अधिक दिक्कतें गरीबों और मध्यम आय वर्गके लोगोंको उठानी पड़ रही है। इसे ध्यानमें रखते हुए केन्द्र सरकारने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा गारण्टी कानूनके तहत सात किलो प्रति व्यक्ति खाद्यान्न देनेका निर्णय किया है। राशनकी दुकानोंसे दो रुपये प्रति किलो गेहूं और तीन रुपये प्रति किलो चावल उपलब्ध करानेका निर्णय अत्यन्त ही उचित और राहतकारी है। प्रधान मन्त्री नरेन्द्र मोदीकी अध्यक्षतामें बुधवारको आर्थिक मामलोंकी मंत्रिमण्डलीय समितिकी बैठकमें लिये गये इस निर्णयसे पूरे देशमें ८० करोड़ लोग लाभान्वित होंगे। वैसे भी भारतीय खाद्य निगमके गोदामोंमें गेहूं और चावलका आवश्यकतासे अधिक स्टाक है। सस्ते मूल्योंपर इनकी निकासीसे जहां जनताको राहत मिलेगी वहीं गोदामोंमें अगले सत्रके लिए स्थान भी खाली हो सकेगा। इस सम्बन्धमें उत्तर प्रदेश सरकारने और भी राहतकारी कदम उठाया है। राज्य सरकारने एक अप्रैलसे दिहाड़ी श्रमिकों और अंत्योदय और पात्र गृहस्थी (खाद्य सुरक्षा) के कार्डधारकोंको एक साथ तीन महीनेका गेहूं और चावल मुफ्त देनेका निर्णय किया है। पंजीकृत श्रमिकोंको राशन कार्ड नहीं होनेपर भी उन्हें राशन दिया जायगा। इसके अतिरिक्त केन्द्र सरकारने देशभरमें गरीबोंके लिए १.७० लाख करोड़ रुपयेके आर्थिक पैकेजकी घोषणा की है। लाकडाउनके कारण असंघटित क्षेत्रके श्रमिकोंकी स्थिति अपेक्षाकृत अधिक खराब हुई है। सरकारके इस कदमसे लगभग दस करोड़ लोग लाभान्वित होंगे। बिहारमें गरीबोंके लिए सौ करोड़की राहत योजना भी स्वागतयोग्य है। संकटके इस समय सरकारके अतिरिक्त औद्योगिक घरानों और कारपोरेट जगतको भी मददका हाथ आगे बढ़ाना चाहिए। यह मानवता और राष्ट्रकी बड़ी सेवा होगी। सीएसआर निधिका बेहतर उपयोग करनेका यह उपयुक्त अवसर है।

पान-मसाला पर प्रतिबन्ध

वैश्विक महामारी कोरोना वायरससे निबटनेके लिए सरकार जहां युद्ध स्तरपर जुटी है, वहीं पान-मसाला और गुटकाकी गन्दगी वायरसको समाप्त करनेकी चुनौतीको और बढ़ा रही है। पान-मसालाका पाउच कहीं भी फेंकना और उसका पीक कहीं भी थूक देना लोगोंकी आदत-सी बन गयी है। महानगरोंमें तो यह कम है लेकिन उत्तर प्रदेशमें यह समस्या गहरी है क्योंकि यहां पान-मसाला और गुटकाका कारोबार बड़े पैमानेपर होता है। बाजारों, दफ्तरोंसे लेकर घरोंतक लोग पान-मसालाकी पीक कोनोंमें थूक देते हैं, जो अनेक रोगोंको जन्म देता है। ऐसेमें उत्तर प्रदेशमें पान-मसाला और गुटकापर प्रतिबन्ध वायरसके संक्रमणको फैलनेसे रोकनेमें जहां मददगार साबित होगा, वहीं जानलेवा बीमारियोंसे भी लोगोंको बचायेगा। उत्तर प्रदेश सरकारने पान-मसालाके निर्माण और उसकी बिक्रीपर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है। इस सम्बन्धमें खाद्य सुरक्षा और औषधि प्रशासनने आदेश जारी कर इसके उल्लंघनको दंडनीय अपराध घोषित किया है। इस आदेशका उल्लंघन पाये जानेपर उस प्रतिष्ठानका लाइसेंस तो निरस्त किया ही जायगा, साथमें उसके विरुद्ध कठोर कारवाई भी सुनिश्चित की जायगी। मुख्य मन्त्री योगी आदित्यनाथने कहा है कि पान-मसाला खाकर थूकने और पान-मसालाका पाउच छोटा होनेके कारण उसका उपयोग करनेपर कोरोना संक्रमण फैलनेकी आशंका बनी रहती है, इसलिए इसका प्रयोग वर्जित किया गया है। हालांकि यह प्रतिबन्ध केवल २१ दिनोंके लिए लगाया गया है लेकिन थूकनेसे पैदा होनेवाले रोगको लेकर गहन विचार करनेकी जरूरत है। केवल महामारीके समय ही नहीं, बल्कि सामान्य समयमें जगह-जगह थूककर संक्रमण फैलानेकी समस्याका स्थायी निदान आवश्यक है। उत्तर प्रदेशमें गुटका निर्माण और बिक्रीपर एक अप्रैल, २०१३ से प्रतिबन्ध है इसके बावजूद इसका कारोबार दिन दूना रात चौगुना बढ़ा है। ऐसेमें उत्तर प्रदेश सरकारने इसपर प्रतिबन्ध लगाकर महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसका कड़ाईसे अनुपालन सुनिश्चित कराना मानव जीवनको बचानेके लिए जरूरी है।

लोक संवाद

अक्षम्य अपराधी चीन

महोदय,-प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंगने बहुत पहले, अपने जीवनकालमें ही मानवप्रजातिको आगाह करते हुए कहा था कि जेनेटिक इंजिनियरिंगसे खिलवाड़ करनेके बहुत ही गम्भीर परिणाम होंगे। उन्होंने मानवप्रजातिपर पड़नेवाले भयावह परिणामकी चेतावनी दिया था, परन्तु चीन, अमेरिका और इसरायल जैसे देश, विभिन्न तरहके रोगोंके खतरनाक किटाणुओं एवं वायरसोंके जीनमें हेर-फेरकर, उन्हें मानवप्रजातिके लिए और अत्यधिक खतरनाक बनानेकी कोशिशमें लगे हैं। उदाहरणार्थ अमेरिकाके विस्कॉन्सिन मेडिकल यूनिवर्सिटीके एक वैज्ञानिकने स्वाइन फ्लूके जीनमें परिवर्तन करके उसे इतना खतरनाक बना दिया कि उसका मुकाबला मनुष्यके इम्यून सिस्टमके वशकी बात नहीं है, न ही उससे बचावके लिए कोई दवा है, न कोई टीका है। चीनके वुहान शहरमें कोरोना वायरसके संक्रमणसे अबतक हजारों लोगोंकी अमूल्य जाने जा चुकी हैं। यह चीन द्वारा जान-बूझकर वायरसोंके जीनमें बदलाव कर उन्हें और ज्यादा खतरनाक वायरस बनानेके लिए वुहान नामक शहरमें बाकायदा इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी नामक प्रयोगशाला (पी-४) बनाकर उसमें इस प्रकारके ऐसे खतरनाक वायरस तैयार करनेकी तकनीक इजाद किया कि उनपर न तो मनुष्यके शरीरकी इम्यून सिस्टम सक्षम हो पा रहा है, न उसपर कोई दवाका असर हो रहा है। आज किसी गलती या लापरवाहीसे वुहान शहर स्थित प्रयोगशालामें तैयार इस अत्यंत खतरनाक वायरसके बाहर आनेसे दुनियाभरमें तबाही मची है। इसी वुहान शहरसे १९९६ में बर्ड फ्लू फैला। २००३ में सॉर्सका अचानक प्रकोप हुआ। उसके बाद २०१२ में मर्स नामके वायरस फैला। उक्त वायरसों द्वारा फैले संक्रमणसे दर्जनों देशोंके हजारों लोगोंको अपनी जानसे हाथ धोना पड़ा था। कल्पना करें ऐसे खतरनाक जीवाणुओंकी भारी मात्रामें निर्माण करके अपने शत्रु देशोंके लोगोंपर अपने गोपनीय ड्रोन विमानों या इंटरकॉण्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइलोंके वारहेडमें लगातार गुपचुप तरीकेसे छिड़काव कर दें, जिनकी न कोई दवा है, न टीका, न मानव शरीरमें उनके विरुद्ध कोई प्रतिरोधक क्षमता तो उस भयावह मंजरकी सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है, क्योंकि यह खतरनाक कोशिकीय विषाणु पलक झपकते ही लाखों-करोड़ों मनुष्योंको मौतकी नींद सुला देंगे। इसलिए इस तरहके भयानक प्रयोग, चीनके कोरोना वायरसकी तरह उस सृजनकर्ता देश सहित समस्त मानवप्रजातिके लिए कहीं भयंकरतम् अभिशाप न बन जाय। इसलिए इस प्रकारके मानवहंता राक्षसी प्रवत्तिपर हर हालमें रोक लगनी ही चाहिए, जन-कल्याणकारी वैश्विक संघटनोंको इसके खतरनाक जैविक हथियार बनानेके कुकृत्यपर हर हालमें रोक लगानेके लिए संघर्ष छेड़ना चाहिए ताकि दुनिया भविष्यमें और असुरक्षित न हो सके। आखिर ऐसे मानवहंता वायरस बनानेके जघन्य, अक्षम्य अपराधमें चीनको दण्डित करनेके लिए दुनियाके समस्त विश्वके देश मिलकरके संयुक्त मंच संयुक्त राष्ट्र संघका उपयोग क्यों नहीं करते। आज कोरोना वायरसजनित जानलेवा रोग कोविड-१९ से समस्त विश्वकी मनुष्य प्रजातिका अस्तित्व ही गंभीर संकटमें पड़ा है। आखिर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे अन्तरराष्ट्रीय मंचोंकी क्या उपादेयता है। चीनपर इस कुकृत्यसे आज विश्वमानवताका अस्तित्व ही संकटमें पड़ गया है। आजका संकट द्वितीय विश्वयुद्धमें अमेरिका द्वारा जापानके हिरोशिमा और नागासाकीपर गिराये गये परमाणु बमोंकी दिलदहला देनेवाली विभीषिकाके संकटसे किसी भी तरह कम नहीं है। चीनसे हजारों किलोमीटर दूर विभिन्न देशों यथा इटली, स्पेन, अमेरिका जैसे देशोंमें हजारों लोग अपनी जानसे हाथ धो बैठे हैं और लाखों लोग संक्रमित हैं, ऐसेमें संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे वैश्विक मंचसे समूचे विश्वकी तरफसे चीनको इस तरहके गंभीर अपराध करनेके विरुद्ध यह चेतावनी तो दी ही जा सकती है कि यह भविष्यमें ऐसे कुकृत्यकी पुनरावृत्ति न करे, जिससे समस्त मानवप्रजातिकी जान ही सांसतमें है। -निर्मल कुमार शर्मा, गाजियाबाद।

खौफ के साये में जिन्दगी

दुनियाकी स्थिति निस्संदेह भयावह है। १९० देश कोरोना वायरसकी चपेटमें हैं। बीस हजारसे अधिककी मृत्यु हो चुकी है। लाकडाउन ही इस महामारीसे सुरक्षित रहनेका एकमात्र श्रेष्ठ विकल्प है। स्थिति डरावनी इसलिए है कि मृतकोंकी संख्या उन देशोंमें ज्यादा है जो शक्तिसंपन्न हैं और जिनकी स्वास्थ्य सेवाएं सर्वोत्तम हैं।

❑ अवधेश कुमार

अमेरिका जैसी विश्वकी महाशक्तिके यहां कोरोनासे मरनेवालोंका आंकड़ा सात सौको पार कर चुका है। वहां इस समय ५० हजारसे अधिक संक्रमित हैं। अकेले न्यूयार्क शहरमें २२ मार्चको २४ घंटेमें १२३४५ मामले सामने आये। इटलीके लिए यह सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी साबित हो रही हैं। वहांकी हजारके आसपास लोग मारे जा चुके हैं और ५९ हजारके आसपास संक्रमित हैं। पूरी स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा गयी है। अस्पतालोंमें जगह नहीं है और मैदानोंमें कैम्प लगाये गये हैं। डॉक्टर्स बीमारोंमें जवानोंका इलाज कर रहे हैं तो बुजुर्ग अपने हालपर छोड़े जा रहे हैं। इटलीके प्रधान मंत्रीने पूरी तरह हथियार डाल दिया है। उन्होंने कहा है कि स्थितिपर उनका कोई नियंत्रण नहीं है। हमारी सारी शक्ति खर्च हो चुकी है। स्पेनमें कोरोनाने करीब ३६०० से ज्यादा लोगोंकी जान ले ली है। ब्रिटेनमें ३५० तो फ्रांसमें ८०० से ज्यादा लोग संक्रमणके बाद जान गंवा चुके हैं। स्पेनमें स्वास्थ्यकर्मी ही संक्रमित हो रहे हैं और उनको आइसोलेशनमें रखनेके कारण समस्याएं आ रहीं हैं। मैड्रिडके कई अस्पतालोंमें संक्रमण फैल चुका है। इन्हें हर घंटे सैनिटाइज किया जा रहा है।

> जर्मनीकी चांसलर एंजेला मर्केलका कहना कि हमारा व्यवहार संक्रमणको फैलनेसे रोकनेका सबसे प्रभावी तरीका है। चांसलर मर्केल स्वयं आइसोलेशनमें हैं। इसका एकमात्र रास्ता है अपनेको बिल्कुल कैद कर देना। सामान्य युद्धमें सिर्फ सैनिक मरते हैं। कोरोनाके युद्धमें यदि वारयसका बम लगाये गोली लगी तो आपको तत्काल पता भी नहीं चलेगा और आप घर लौटकर अपने परिवार, मित्र, रिश्तेदार और न जाने कितनोंकी जिन्दगी ले लेंगे। यूरोपमें आवाजाहीपर रोक न लगाने, एक साथ इकट्ठा होनेपर बंदिश न लगानसे ही कोरोनाने इतना भयावह रूप लिया है।

वस्तुतः चीनके बाद यूरोप और अमेरिका इसका सबसे बड़ा शिकार हो चुका है। इसके बावजूद कि इन देशोंने अपने सारे संसाधन, बचाव एवं चिकित्सामें झोंक दिये हैं। अमेरिकामें स्वास्थ्य आपातकाल लागू है। अमेरिकाके कमसे कम १६ राज्योंने अपने नागरिकोंको घरमें रहनेका आदेश जारी किया है। कुल मिलाकर पूरा विश्व इस समय लाकडाउनकी स्थितिमें है। फ्रांस सहित अनेक देशोंमें सेना उतारनी पड़ी है। यह स्वयं सोचनेकी बात है कि जब इन साधन संपन्न देशोंकी ऐसी दशा है तो यदि यह महामारी विकासशील और गरीब देशोंको अपनी चपेटमें ले लिया तो फिर क्या होगा। यही प्रश्न हमें अपने आपसे पूछना है। सच यह है कि कोरोनाकी चपेटसे अब कम ही देश बचे हैं। पहले अफ्रीकासे खबर नहीं आ रही थी लेकिन विश्व स्वास्थ्य संघटनने अब वहांसे कोरोना संक्रमणकी पुष्टि शुरू कर दी है। भारतमें ११ मार्चतक केवल ७१ मामले थे। अब वह ६०० को पार गया है। इसका अर्थ हुआ कि संख्या तेजीसे बढ़ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संघटनके प्रमुख टेड्रोस गेब्रियिसोसने कहा कि कोरोना वायरस महामारी तेजीसे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि इसके पहले मामलेसे एक लाखतक पहुंचनेमें ६७ दिनका समय लगा लेकिन दो लाख पहुंचनेमें ११ दिन और दोसे तीन लाख पहुंचनेमें चार दिनका समय लगा। केवल दो दिनोंमें चार लाख पार कर गया है।

जैसा हम जानते हैं कोई दवा इसे नहीं रोक सकती। जर्मनीकी चांसलर एंजेला मर्केलका यह वक्तव्य वायरल हो रहा है कि हमारा अपना व्यवहार संक्रमणको फैलनेसे रोकने एवं धीमा करनेका सबसे प्रभावी तरीका है। चांसलर मर्केल खुद ही आइसोलेशनमें हैं। इसका एकमात्र रास्ता है अपनेको बिल्कुल कैद कर देना। कोरोना महामारीको उस हमलेकी तरह देखना होगा जहां चारों ओरसे बमबारी हो रही है, गोलियां बरस रहीं हैं और नीचे बारुदी सुरंग बिछा है। जैसे ही आप निकले कि आप उसकी जदमें आ गये। सामान्य युद्धमें तो आप अकेले मरते हैं। कोरोना महामारीके युद्धमें यदि आपको वारयसका बम लगाये गोली लगी तो आपको तत्काल पता भी नहीं चलेगा और आप घर लौटकर अपने परिवार, मित्र, रिश्तेदार और न जाने कितनोंकी जिन्दगी ले लेंगे। यूरोपके बारेमें जितनी जानकारी आयी है उसका निष्कर्ष यही है कि समयपर कदम न उठाने यानी लोगोंकी आवाजाहीपर रोक न लगाने, एक साथ इकट्ठा होनेपर बंदिश न लगाने आदिके कारण ही कोरोना महामारीने इतना भयावह रूप लिया है।

अमेरिकाकी सर्जन जर्नल डाक्टर जेरोम एडम्सने एक इंटरव्यूमें कहा कि उनके यहां मरनेवालोंमेंसे ५३ प्रतिशतकी उम्र १८ से ४९ सालके बीच थी। यह उस धारणासे अलग है कि ज्यादातर बुजुर्ग ही इस महामारीसे अपनी जान गंवा रहे हैं तो यह सोचना ठीक नहीं कि हम यदि जवान हैं तो हमारी मौत इससे नहीं हो सकती। पटनामें कतरसे आये एक ३८ वर्षीय युवककी मौत हो गयी। केंद्रीय स्वास्थ्यमंत्री डा. हर्षवर्धनने बताया है कि देशमें आठ हजारसे ज्यादा लोगोंको सरकारके क्वारैंटाइन सेंटरमें रखा गया है और एक लाख ८७ हजार लोग कॉम्युनिटी सर्विलांसपर हैं। करीब दो लाख लोगोंने कोरोनाके बनाये गये हेल्पलाइन नंबरपर फोन किया है और ५० हजार लोगोंने ई-मेल भेजकर जानकारी मांगी है। यह संख्या सामान्य नहीं है। विदेशसे आये भारी संख्यामें लोगोंने वादेके अनुसार स्वयंको आइसोलेशनमें नहीं रखा तो उनकी पहचान कर जबरन आइसोलेशनमें रखा जा रहा है। दिल्लीमें १ मार्चसे विदेशसे आनेवाले ३५ हजार लोगोंकी पहचान हुई है और सारे जिला मजिस्ट्रेटको उन्हें आइसोलेशनमें रखनेका आदेश दिया गया है। यह कितना कठिन है इसका अनुमान स्वयं लगा सकते हैं। लॉकडाउन या कर्फ्यूको जनता और देशके हितमें उठाया गया कदम है। प्रधान मंत्री मोदीने अपने पहले संबोधनमें लोगोंसे घरोंमें रहनेकी अपील की थी और उसका असर भी हुआ। बहुमत घरोंमें स्वयंको कैद रखे था। किन्तु एक बड़ी संख्या बाहर निकल रही थी। वह समझ नही रहे थे कि वायरसके चेनको तोड़ना है तो सड़कों, बाजारों सबको कुछ दिनोंतकके लिए खाली रखना पड़ेगा। भारतमें अबतक वही लोग संक्रमित हुए हैं जो या तो विदेशोंसे आये या विदेशोंसे आये लोगोंके संपर्कमें थे। चेनको तोड़नेके लिए ही पहले सारे अंतरराष्ट्रीय उड़ानोंको प्रतिबंधित किया गया, फिर घरेलू उड़ानें, यात्री रेल बंद की गयीं तो ज्यादातर राज्योंने पहले अंतरराज्यीय बसोंको और फिर राज्योंके अन्दर सामन्य बस संचालनको रोक दिया है।

यह संक्रमण पैदा होने और उसके विस्तारको रोकनेके लिए अपरिहार्य हैं। इसके बाद बारी लोगोंकी है। दिल्लीके मुख्य मंत्री अरविन्द केजरीवालने लोगोंको समझाते हुए कहा कि मान लो हमारे यहां २५-३० हजार कोरोना संक्रमित हो गये तो हम कुछ नहीं कर सकते। तब लॉकडाउन करनेका कोई फायदा भी नहीं होगा। सारे अस्पताल मिलकर भी इलाज नहीं कर सकते। यह पूरे भारत वर्षपर लागू होता है। यदि राजधानी दिल्ली इसे संभालनेकी स्थितिमें नहीं होगी तो कौन शहर और राज्य इसमें सक्षम हो सकेगा। यूरोपमें इतनी बुरी इसीलिए हुई, क्योंकि जनवरीमें मामला सामने आनेके बावजूद वहां लोगोंकी आवाजाहीको प्रतिबंधित करनेसे लेकर बचावके अन्य कदम नहीं उठाये गये। वहां तो हवाई अड्डोंपर अनिवार्य स्क्रीनिंगतककी व्यवस्था नहीं हुई। भारतने जनवरीसे ही स्क्रीनिंग शुरू की और जांच भी। वास्तवमें ऐसे पूर्वोपायके कारण ही हमारे देशमें स्थिति नियंत्रणमें है। जिस चीनकी बात हो रही है वहां हुबेई प्रांतके साथ बीस राज्योंमें ऐसा लाकडाउन किया गया जो हमारे यहांके कर्फ्यूसे ज्यादा सख्त था। वायरसके केन्द्र वुहान शहर और उसके आसपासके इलाकोंमें आवश्यक सेवा ही नहीं, मेडिकल स्टोरतक बंद कर दिये गये। जिसे लेकर आशंका हुई उसे पुलिस जबरदस्ती उठा लेती। इसमें अनेक त्रासदियां हुईं। अनेक होटल और घर ध्वस्त कर दिये गये। वहां कोई धरना-प्रदर्शन हो नहीं सकता। हमारे यहां स्थिति जितनी बिगड़ जाय तो वैसा कर ही नहीं सकते। निस्संदेह लोगोंको परेशानियां हो रहीं हैं, लेकिन यदि स्वयं, परिवारको, देशको बचाना है तो फिर इसे सहन करनेका ही विकल्प है।

अनिवासियों के प्रति सहानुभूति

कुछ विदेश गये भारतीयोंमें कोरोनाके लक्षणसे लोग विचलित हैं। विदेशोंमें संक्रमणकी वजह अनेक हो सकती है। कुछ कंपनियोंमें मजदूरोंकी आवासीय व्यवस्था ठीक न होनेसे एक कमरेमें कई एक साथ रहते हैं।

❑ सुखदेव सिंह

कोरोना वायरस रूपी दानव आज विश्वकी जनताको धीरे-धीरे निगलता जा रहा है। हालात ऐसे नाजुक बन चुके हैं कि लोग अपनी सुरक्षावश घरोंमें दुबक कर रहनेको मजबूर हैं। इस वायरसने मेडिकल साइंसको चुनौती देकर धार्मिक स्थलोंतकके द्वार बंद करवाकर करोड़ों लोगोंको सोचनेपर मजबूर कर दिया है। इनसानकी सुरक्षाकी जिम्मेदारी अब स्वयं उसकी अपनी है, जब कोई दवा और दुआ भी काम नहीं कर रही है। प्राकृतिक आपदाकी घड़ीमें लोग अब एक-दूसरेके प्रति सहानुभूति प्रकट करके ही अपना आत्मबल बढ़ा सकते हैं। आत्मघाती इस वायरससे कोई भी इनसान कहीं भी संक्रमित हो सकता है, चाहे वह विदेशमें हो या फिर देशमें। वायरसके बढ़ते प्रकोपकी वजहसे सोशल मीडियामें ऐसा प्रचार करना कि पैसा कमानेके लिए विदेश नजर आता और बीमार पड़नेपर भारतमें ऐसे लोग आकर लोगोंकी जिन्दगियां खतरेमें डालते जा रहे हैं, कहना बिलकुल शर्मनाक बात है। विदेशोंमें रहनेवाला कौन इनसान चाहेगा कि जब वह अपने परिवारमें वापस लौटे तो सभीको संक्रमित किये जानेका उपहार दे। सोशल मीडियामें आजकल कुछ बुद्धिजीवी लोग इस तरह अनिवासीय भारतीयोंके खिलाफ पोस्ट डालकर अपनी घटिया मानसिकताका परिचय देते जा रहे हैं। एनआरआई किसी हवाई जहाजकी टिकट बुक करवाता है तो उसका ऑनलाइन पंजीकरण हो जाता है। एयरपोर्टपर प्रस्थान करते समय प्रवर्तन विभागकी ओरसे व्यक्तिकी आंखें स्कैन और पासपोर्टपर भारत लौटनेकी एंट्री रूपी मुहर भी दागी जाती है। यह प्रक्रिया पूरी ऑनलाइनसे की जाती है। ऐसेमें यह कहना कि एनआरआई लोग चोरी-छिपे आकर लोगोंको संक्रमित कर रहे हैं, सरासर गलत है। कोरोना वायरसके चलते अब तो लगभग सभी एयरपोर्टपर थर्मल स्कैनिंग भी की जा रही है। इसके बावजूद यदि हिमाचल प्रदेशमें किसी अनिवासी भारतीयमें कोरोना वायरसके लक्षण पाये जाते हैं तो गलती किसकी मानी जायगी। आजके दौरमें दो चिकित्सकोंकी रिपोर्ट आपसमें मेल नहीं खाती। ठीक वैसा ही हाल बीपी, शुगर एवं अन्य मशीनोंका भी है। विदेशका वीजा हासिल करनेसे पहले लोगोंको चिकित्सीय जांचकी प्रक्रियासे होकर गुजरना पड़ता है। विदेश आगमनपर एक बार फिरसे चिकित्सीय जांच करवाकर ही रोजगार मुहैया करवाया जाता है। अधिकतर कम्पनियोंकी ओरसे ऐसे लोगोंको स्वास्थ्य इंश्योरेंस कार्ड वितरित किये जाते हैं जिससे वह अपने स्वास्थ्यकी सही देखभाल ठीकसे कर सकें। यही नहीं वीजा नवीनीकरणके दौरान भी गहन चिकित्सीय प्रक्रियासे होकर गुजरना पड़ता है। बदलते खान-पान और रहन-सहनकी वजहसे शुगर, बवासीर, बीपी, बुखार, सिरदर्द, खांसी, जुकाम और गैस्टिक अल्सरतककी बीमारीसे लगभग अधिकतर लोग ग्रसित हैं। आर्थिक मंदीकी वजहसे विदेशोंमें भी रोजगारके अवसर निरन्तर कम होते जा रहे हैं। खाड़ी देशोंकी युवा पीढ़ीको रोजगारसे जोड़े रखना अब यहांकी सरकारोंके लिए किसी चुनौतीसे कम नहीं रहा। कोरोना वायरसकी वजहसे निजी कम्पनियोंकी मानों कमर ही टूटकर रह गयी है। कम्पनी प्रबंधक इस प्राकृतिक आपदाकी घड़ीमें कोई जोखिम उठाये जानेकी बजाय लोगोंको वापस घर भेजना ही उचित समझते जा रहे हैं। रोजगार छिन जानेके बाद ऐसे लोग अपने घरोंकी ओर रुख नहीं करेंगे तो कहां जायंगे। बिना कारण जाने सिर्फ यह कयास लगाना कि ऐसे लोग कोरोना वायरस नामक बीमारीसे ग्रसित होकर अपने घरोंको लौट रहे हैं, ऐसा समझना भी गलत होगा। एक तो रोजगार असुरक्षित, ऊपरसे बैंकोंकी कर्जदारी तले कई भारतीय दबे हुए हैं। ऊपरसे कोरोना वायरसका कहर आनेसे ऐसे लोग किस तरह तनावकी जिन्दगी जीनेको मजबूर हैं, उनके सिवाय दूसरा कोई नहीं जान सकता है। आज जरूरत विदेशोंमें रोजगार कमाने निकले लोगोंके प्रति अपनापन जतानेकी और उनके परिवारजनोंका सहारा बननेकी है। बजाय इसके लोग उनके खिलाफ मुंहसे आग उगलते जा रहे हैं।

सचाई यह भी कि विदेशोंसे वापस वतन लौटनेवाले कुछ एनआरआई लोगोंमें इस संक्रमण रोगके लक्षण पाये जानेकी सुर्खियां पढ़नेको मिल रही हैं। विदेशोंमें संक्रमित होनेकी अनेकों वजह बन सकती हैं। कुछ कम्पनियोंमें मजदूरोंकी आवासीय व्यवस्था ठीक नहीं होती। एक कमरेमें अन्य देशोंके लोगोंके साथ ही ठहराव किया जाता है। समय अभावकी वजहसे लोग अपना खान-पान भी सही नहीं रख पाते जिसकी वजहसे नाममात्र बीमारियोंसे ग्रसित हो सकते हैं। मांसाहारी लोगोंकी तादाद बढ़ती जा रही है जो कि आंखें बंद करके सरेआम मात्र दिखावेके लिए ऐसे खाद्य पदार्थ निगलते जा रहे हैं। भीड़-भाड़से भरे शॉपिंग मॉलमें खरीददारी करना लोग अपना स्टेटस सिंबल बना चुके हैं। ऐसी आदत सिर्फ विदेशोंमें रहनेवालोंकी नहीं, बल्कि देशके लोग भी अब कम शौकीन नहीं रह गये हैं। छुट्टीके दौरान पार्कोंमें जाकर मौज-मस्ती करना, समुंदरमें जाकर नहाना भी लोगोंका मन बहलानेका साधन है। विश्व देशोंकी मुद्राका आदान-प्रदान अपने हाथोंसे बिना अहतियात बरते करनेसे आखिर कौन संक्रामक रोगोंसे बच सकता है। एक एटीएम मशीनपर शामतक विश्वके कई देशोंके लोग पैसा निकालकर चलते बनते हैं। ऐसेमें किस देशका व्यक्ति कोरोना वायरससे संक्रमित है, पता लगाना बहुत बड़ी चुनौती है। अपने परिवार और समाजकी सुरक्षाकी चिंता करते हुए सरकारोंके दिशा-निर्देशोंका पालन करना हर व्यक्तिका कर्तव्य है।

आत्मबोध

नवरात्रिका महत्व

मान्यता है कि नवरात्रमें महाशक्तिकी पूजा कर श्रीरामने अपनी खोयी हुई शक्ति पायी, इसलिए इस समय आदिशक्तिकी आराधनापर विशेष बल दिया गया है। मार्कंडेय पुराणके अनुसार दुर्गा सप्तशतीमें स्वयं भगवतीने इस समय शक्ति-पूजाको महापूजा बताया है। देवी दुर्गाकी स्तुति नौ दिनोंतक चलनेवाले साधना पर्व नवरात्रका चित्रण है। संस्कृत व्याकरणके अनुसार नवरात्रि कहना त्रुटिपूर्ण है। नौ रात्रियोंका समाहार, समूह होनेके कारणसे द्वंद्व समास होनेके कारण यह शब्द पुलिंग रूप नवरात्रमें ही शुद्ध है। पृथ्वी द्वारा सूर्यकी परिक्रमाके कालमें एक सालकी चार संधियां हैं। उनमें मार्च एवं सितंबर माहमें पड़नेवाली गोल संधियोंमें सालके दो मुख्य नवरात्र पड़ते हैं। इस समय रोगाणु आक्रमणकी सर्वाधिक संभावना होती है। ऋतु संधियोंमें अक्सर शारीरिक बीमारियां बढ़ती हैं, अतः उस समय स्वस्थ रहनेके लिए शरीरको शुद्ध रखनेके लिए और तन-मनको निर्मल और पूर्णतः स्वस्थ रखनेके लिए की जानेवाली प्रक्रियाका नाम नवरात्र है। अष्टमी और नवमी दोनों ही दिन कन्या पूजन किया जा सकता है। चैत्र या बासंती नवरात्रका प्रारंभ चैत्र मास शुक्ल पक्षकी प्रतिप्रदासे होता है। चैत्रमें आनेवाले नवरात्रमें अपने कुल देवी-देवताओंकी पूजाका विशेष प्रावधान माना गया है। वैसे दोनों ही नवरात्र मनाये जाते हैं, फिर भी इस नवरात्रको कुल देवी-देवताओंके पूजनकी दृष्टिसे विशेष माना जाता है। आजके भागमभागके युगमें अधिकांश लोग अपने कुल देवी-देवताओंको भूलते जा रहे हैं। कुछ लोग समयाभावके कारण भी पूजा-पाठमें कम ध्यान दे पाते हैं। जबकि इस ओर ध्यान देकर आनेवाली अनजान मुसीबतोंसे बचा जा सकता है। यह कोई अंधविश्वास नहीं, बल्कि शाश्वत सत्य है। नौ दिन यानी हिन्दी माह चैत्र और आश्विनके शुक्ल पक्षकी पहली तिथिसे नौवीं तिथितक प्रत्येक दिनकी एक देवी मतलब नौ द्वारवाले दुर्गके भीतर रहनेवाली जीवनी शक्ति रूपी दुर्गाके नौ रूप हैं-शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्री। पौराणिक कथानुसार प्राचीन कालमें दुर्गम नामक राक्षसने कठोर तपस्या कर ब्रह्माजीको प्रसन्न कर लिया। उनसे वरदान लेनेके बाद चारों वेद एवं पुराणोंको कब्जेमें लेकर कहीं छिपा दिया, जिससे विश्वमें वैदिक कर्म बंद हो गया। इससे चारों ओर घोर अकाल पड़ गया। पेड़-पौधे एवं नदी-नाले सूखने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। जीव-जन्तु मरने लगे। सृष्टिका विनाश होने लगा। सृष्टिको बचानेके लिए देवताओंने व्रत रखकर नौ दिनतक मां जगदंबाकी आराधना की और मातासे सृष्टिको बचानेकी विनती की। तब मां भगवती एवं असुर दुर्गमके बीच घमासान युद्ध हुआ। मां भगवतीने दुर्गमका वध कर देवताओंको निर्भय किया। तबसे नवदुर्गा तथा व्रतका शुभारंभ हुआ।

अफवाहों पर अंकुश लगाना आवश्यक

❑ योगेश कुमार गोयल

तीन महीने पहले चीनके वुहान शहरसे हुआ कोरोनाका कहर देखते ही देखते दुनियाके लगभग सभी देशोंतक पहुंच गया है। कोरोनासे संक्रमित लोगोंकी संख्या दुनियाभरमें चार लाखतक पहुंच गयी है और १७ हजारसे अधिक लोगोंकी मौत हो चुकी है। इटलीमें तो कोरोनाके कारण चीनसे भी ज्यादा मौतें हो चुकी हैं। कोरोनाको लेकर कई देशोंमें लॉकडाउन है, अर्जेण्टीनामें भी २० मार्चसे लॉकडाउन है। भारतमें कोरोनाके मंडराते खतरेके मद्देनजर देशभरमें लॉकडाउन कर दिया गया है। देशमें अभीतक कोरोनाके करीब साढ़े पांच सौ मामले सामने आ चुके हैं और कोरोनाका खतरा निरन्तर गहरा रहा है। खतरेका अंदाजा इसीसे लगाया जा सकता है कि दो सप्ताहमें ही देशमें कोरोना संक्रमितोंकी संख्या दस गुनासे ज्यादा हो गयी। यही कारण है कि केन्द्र सरकार सहित तमाम राज्य सरकारें इसे द्वितीय चरणसे तीसरे चरणमें पहुंचनेसे रोकनेके लिए कमर कस रही हैं।

आम तौरपर जब भी कोई प्राकृतिक संकट आता है तो कुछ देशों अथवा राज्योंतक ही सीमित रहता है लेकिन इस बारका संकट ऐसा है, जिसने विश्वभरकी पूरी मानव जातिको संकटमें डाल दिया है। इसलिए देशके प्रत्येक नागरिकको अब अच्छी तरहसे समझ लेना चाहिए कि कोरोनाके आसन्न खतरेको हल्केमें लेना देशके लिए बेहद खतरनाक हो सकता है। दरअसल अभीतक विज्ञान कोरोना महामारीसे बचनेके लिए कोई निश्चित उपाय नहीं सुझा सका है और न ही इसकी कोई वैक्सीन बन पायी है। ऐसी स्थितिमें भारतमें कोरोनाके गहराते खतरेको देखते हुए हर किसीकी चिंता बढ़ना स्वाभाविक है क्योंकि भारत जैसे सवा अरबसे भी अधिक आबादीवाले विकासके लिए प्रयत्नशील देशपर कोरोनाका संकट कोई सामान्य बात नहीं है। कोरोनाके इसी आसन्न खतरेको देखते हुए प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदीने एक सप्ताहमें दो बार राष्ट्रके नाम अपने संदेशमें देशवासियोंसे बचावके लिए संयमका संकल्प लेनेका आह्वान किया और घरोंसे बाहर नहीं निकलनेकी अपील की है।

एक ओर जहां कोरोनाका खतरा गहरा रहा है, वहीं सोशल मीडियाके जरिये कोरोनाको लेकर बहुत सारी अफवाहें भी फैलायी जा रही हैं, कोरोनाको लेकर मजाक बनाया जा रहा है, आजकी परिस्थितियोंको देखते यह सब ठीक नहीं है। सोशल मीडियाके इस तरहके दुरुपयोगपर लगाम लगाये जानेकी जरूरत है। दुनियाभरके विशेषज्ञ एक स्वरमें कह रहे हैं कि कोरोनाकी अबतक कोई वैक्सीन नहीं बनी है और न ही इसका कोई इलाज है, वहीं सोशल मीडियाके महाज्ञानी लोग कोरोनाको लेकर बेतुका ज्ञान बांट रहे हैं। कोई करेलेका जूस पीनेसे कोरोना वायरस महज दो घंटेमें लुप्त हो जानेका दावा करते हुए इस संदेशको तेजीसे वायरल करनेको कह रहा है तो कोई गौमूत्रके सेवनसे कोरोनासे बचनेकी सलाह दे रहा है। इसी प्रकार कुछ लोग लहसुन, प्याज, गर्म पानी, विटामिन सी, स्टेरॉयड, शराब इत्यादिके जरिये कोरोनाको भगानेकी उलजुलूल सलाह दे रहे हैं। नोवेल कोरोना श्वसन संबंधी रोग है और कोरोना वायरसको ७५ प्रतिशत अल्कोहल छिड़कने तथा उससे साफ करनेसे ही मारा जा सकता है, शराब पीकर नहीं। आजके समयमें सोशल मीडियापर फैलती अफवाहोंपर तत्काल प्रभावसे अंकुश लगाये जानेकी सख्त जरूरत है। कई बार गलत सूचनाओंके कारण समाजमें दहशतका माहौल भी बन जाता है। प्रत्येक नागरिकका कर्तव्य है कि देशको कोरोनाके बड़े खतरेसे बचानेके लिए ऐसी अफवाहोंसे बचते हुए केवल सरकार तथा विश्व स्वास्थ्य संघटन द्वारा जारी दिशा-निर्देशोंका ही पालन किया जाय। अच्छा होगा, यदि कोरोनाको लेकर बेतुके ज्ञान बांटनेके बजाय सोशल मीडिया प्लेटफार्मका लोगोंको जागरूक करनेके लिए बेहतर उपयोग किया जाए।

कोरोनाको लेकर बहुत सारे लोगोंके मनमें अब भी यह भय व्याप्त है कि कोरोनाका संक्रमण होनेके पश्चात् मौत निश्चित है लेकिन वास्तवमें ऐसा नहीं है। अभीतकके आंकड़े देखें तो कोरोना संक्रमणके बाद भी दुनियाभरमें हजारों मरीज ठीक हो चुके हैं। हालमें एम्स द्वारा मरीजोंके लिए जारी जागरूकता दिशा-निर्देश पुस्तिकामें स्पष्ट किया गया है कि कोरोना संक्रमित केवल बीस फीसदी मरीजोंको ही अस्पतालमें भर्ती करनेकी आवश्यकता पड़ती है, जिनमेंसे कुछको गहन चिकित्सा निगरानी कक्षमें रखना पड़ता है जबकि ८० फीसदी मरीज घरमें आइसोलेशनमें रहकर खुद ही ठीक हो जाते हैं। एम्स द्वारा जारी इस पुस्तिकामें बताया गया है कि लोगोंको कोरोनाको लेकर घबरानेकी नहीं, बल्कि सतर्क रहने और भीड़-भाड़से बचने तथा सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशोंको अपनानेकी जरूरत है। एम्स विशेषज्ञोंके मुताबिक जिन मरीजोंको उच्च रक्तचाप, डायबिटीज, कैंसर जैसे रोग हैं, उन्हें कोरोनाका खतरा ज्यादा रहता है। ऐसे मरीज भीड़-भाड़से बचें और बार-बार हाथ धोते रहें। एम्सकी जागरूकता दिशा-निर्देश पुस्तिकाके अनुसार कोरोना वायरस फर्श अथवा जमीनपर कितने समयतक रहता है, इसका कोई निश्चित आंकड़ा नहीं है लेकिन कुछ अध्ययनोंके अनुसार फर्शपर यह वायरस कुछ घंटोंसे लेकर कई दिनोंतक जीवित रह सकता है, जो तापमान तथा परिस्थितियों और फर्शकी प्रकृतिपर निर्भर करता है। पुस्तिकाके मुताबिक यदि फर्श संक्रमित है तो फर्शको संक्रमणरोधी तरल पदार्थसे साफ-सुथरा रखें और सर्दी-जुकाम, छींक या बुखारसे पीड़ित व्यक्तियोंसे कमसे कम एक मीटरकी दूरी बनाकर रहें। कोरोनासे बचावका सबसे बेहतर उपाय यही है कि साफ-सफाईपर विशेष ध्यान दें और भीड़भाड़वाली जगहोंके साथ-साथ अफवाहोंसे भी व्यापक दूरी बनायें।